भूमिका

रामलीला के बारे में पढ़ते समय ये एहसास हुआ कि 'राम' तो सभी कलाओं में मौजूद हैं, वह नाट्यकला में भी अपनी प्रभावी छवि के साथ उपस्थित हैं, लेकिन हर व्यक्ति के राम अलग हैं यानि अलग-अलग व्यक्ति का 'परसेप्शन' राम को लेकर अलग बन पड़ता है, यह समझना मुश्किल है कि एक कथा और उसके चरित्र लगभग पूरी दुनिया में किसी न किसी रूप में उपस्थित हैं, इतनी विविधता कैसे ? यानि रामकथा नाम की एक गाड़ी है जिस पर कोई भी कला सवार हो सकती है यह कैसे हो सकता है, लोकनाट्यों में भी राम, संस्कृत नाटकों में भी राम, गायन, नृत्य एवं चित्रकला इत्यादि सभी जगह रामकथा यह सब कैसे ? यह बड़ा विषय है, इस पर आगे शोध किया जा सकता है।

दरअसल रामायण के शास्त्रीय पाठ मौजूद हैं परंतु रामलीला लोक समझ को बयां करती है। किसी भी लोक मंचन में महाख्यान के तत्व प्राथमिक स्त्रोत के रूप मे मौजूद रहते हैं। रामायण की ही तरह रामलीला के मंचन में काफी विविधता पाई जाती है इसके अलावा इसकी ख़ास बात यह होती है कि यह जिस विशिष्ट लोक की प्रस्तुति होती है उसके बहुत सारे सांस्कृतिक तत्व की एक कलात्मक बुनावट इसमें मिलती है। निश्चित रूप से यह बुनावट (Structure) कसी हुई न होकर ढीली होती है जिसमें से समसामयिक यथार्थ और लोक जीवन के समूहिक अनुभव के धागे उसमें अपनी डिज़ाइन आरोपित करते हैं।

रामलीला के व्यापक सांस्कृतिक देश-काल (Time & Space) के फैलाव में विभिन्न मुख्यधारा के समाजों में कुछ प्रसंगों की भिन्नताओं को छोड़कर संरचनात्मक और प्रतिमानों

की समानता देखी जा सकती है, जबकि ऐसे समाजों के बीच इसके लोक प्रस्तुतियों में वाद्य, गायन, नृत्य, रंग और परिधानों के माध्यम और प्रसंगों की भिन्नता के साथ इसके प्रतिमानों की भिन्नता को भी रेखांकित किया जा सकता है। मुख्यधारा समाज के अलावा जनजातीय समाजों मे भी इसके 'परसेप्शन' (Perception) को देखा जा सकता है। इस विषय को समझने के लिए इलाहाबाद के क्षेत्र की रामलीलाओं की प्रस्तुतियों को चुना गया है, ऐसा इसलिए कि यह क्षेत्र वाराणसी के नजदीक है और एक लोक मान्यता के अनुसार तुलसीदास ने वाराणसी में रामलीला शुरू कराने के बाद मेघा भगत के साथ इलाहाबाद में रामलीला शुरू कराई, दूसरी मान्यता के अनुसार ऋषि विश्वामित्र का आश्रम इलाहाबाद के पास ही था जहां से लव-कुश ने राम की कथा गायन परंपरा की नींव रखी और इसी से रामलीला का प्रारम्भ भी माना जा सकता है। इसके अलावा शोध के अल्प समय (जनवरी से अप्रैल) में रामलीला प्रस्तुति को देख पाना मुश्किल था, इलाहाबाद की रामलीला को हर वर्ष मैं देखता रहा हूँ इसलिए इस क्षेत्र का चुनाव किया गया, इसके अलावा इलाहाबाद की रामलीला के क्षेत्र को दो भागों में (ग्रामीण तथा नगरीय) बांटकर देखने की कोशिश की गई है। जिससे शोध में विविधता आ सके।

चूँकि यह रामलीला का शोध है इसलिए प्राथमिक शोध प्रविधि को ज़्यादा महत्व दिया गया है, इसके अंतर्गत चयनित स्थानों पर जाकर रामलीला की प्रस्तुति तथा उनके वीडियो देखने को मिले। विभिन्न क्षेत्रों में नृत्य, गायन, वाद्य,परिधानों का अध्ययन करते हुए रामलीला के परिवर्तनों को रेखांकित करने की कोशिश की गई है। रामलीला के आख्यानों में बदलावों को रेखांकित करते हुए उसका विश्लेषण भी कमोबेश करने की कोशिश की गई है। रामलीला के कलाकारों, आयोजकों,दर्शकों का साक्षात्कार तथा कुछ विशेषज्ञों से खुली प्रश्नवाली के जरिये

भी विषय को समझने की कोशिश की गई है। द्वितीयक शोध प्रविधि के तहत रामलीला के इतिहास को जानने लोक को समझने के लिए किताबों, पत्र-पत्रिकाओं का सहारा लिया गया है।

"लोक समझ में रामलीला : संदर्भ इलाहाबाद की रामलीला" इस विषय को चार अध्यायों के द्वारा समझने का प्रयास किया गया है, और दरअसल यह एक ऐसा कार्य है जिसमें तथ्यों के संकलन को प्रमुखता के साथ रखा गया है, इसके पीछे समय का कम होना है। भविष्य में इन तथ्यों से कुछ नया कहा जा सकने का प्रयास किया जा सकता है।

प्रथम अध्याय है "लोक की अवधारणा" इसे चार खंडों में बांटकर समझने की कोशिश की गई गई, पहले खंड में लोक का परिचय है, जिसमें यह स्पष्ट करने की कोशिश है कि लोक क्या है, क्या असल में लोक वही है जिसे हमारे औपनिवेशिक बुद्धिजीवियों ने बनाया है, जिसमें 'other' बनाया जाता है, यानि एक देखेगा दूसरे को, जिसमें हम सभी को 'बनाम' के रूप में देखने लगते हैं जैसे गाँव का आदमी और शहर का आदमी, यानि एक contesting relation बन जाता है। या फिर जिसे हजारी प्रसाद दिवेदी कहते हैं कि *"लोक शब्द का अर्थ "जनपद" या "ग्राम्य" नहीं है बल्कि नगरों व गावों में फैली हुई वह समूची जनता है जिनके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं हैं।"*[1]

इस पर कई विचारों को समझने के बाद इस में यह तय किया कि मैं आगे हजारी प्रसाद दिवेदी के लोक की परिभाषा के आधार पर आगे की बात रखूँगा। प्रथम अध्याय के दूसरे खंड में लोक की वाचिक परंपरा के बारे में चर्चा की गई है कि कैसे वाचिक परंपरा बनती है और लगातार transform होती रहती है और इस transformation में समय के अनुसार वह कैसे renew भी हो जाती है। इसके बाद तीसरे खंड में लोकमन और प्रतिरोध पर चर्चा की गई है,

[1] लोक संस्कृति आयाम एवं परिप्रेक्ष्य,संपादक-महावीर अग्रवाल-पेज संख्या-25

कि लोक की प्रतिरोध की शक्ति कैसे बनती है, तथा सत्ता के विरुद्ध कैसे अपने आपको खड़ा करती है, और दरअसल वह इसलिए खड़ी होती है क्योंकि उसके इस stand के पीछे एक पूरे मास का लोक हित जुड़ा रहता है। इसके बाद के खंड में लोकनाट्य के उदभव की चर्चा की गई है तथा उपरोक्त सभी खंडों को लोकनाट्य के हिस्से के रूप में देखने की कोशिश की गई है।

दूसरा अध्याय रामलीला के इतिहास के बारे में हैं जिसे चार खंडों में विभक्त कर रामलीला के इतिहास को जानने की कोशिश की गई है, यह आवश्यक है इस शोध के लिए कि रामलीला के क्रमिक विकास में क्या जुड़ा और क्या ख़त्म हुआ। रामलीला के नामकरण की भी थोड़ी सी व्याख्या की गई है।

तीसरे अध्याय में इलाहाबाद की रामलीला को दो भागों में बांटकर क्रमशः शहरी(पजावा, पथरचट्टी) और आंचलिक(बलापुर, सिकंदरा, दारानगर) उनके प्रदर्शन को समझने की कोशिश की गई है। जिसमें पाठ के चयन से लेकर प्रस्तुति तक को शामिल किया है।

चौथा अध्याय मुख्य अध्याय है "धर्म प्रदर्शन से प्रदर्शन कला तक" इसे तीन खंडों मे बांटकर समझने की कोशिश की गई है, जिसमें पहले खंड में "विभिन्न समुदायों में रामलीला की समझ" को समुदाय और संस्कृति के अंतर्गत समझने की चेष्ठा की गई गई, दूसरे खंड में "शैली एवं अंतर्वस्तु में आए एकरूपता और परिवर्तन" को इलाहाबाद की रामलीला के जरिये समझने का प्रयास है यह एक तरह से सभी रामलीलाओं का जो इलाहाबाद में हो रही है उनकी प्रस्तुति का तुलनात्मक अध्ययन है। अंत में "धर्म प्रदर्शन से प्रदर्शन कला तक" में रामलीला क्या धार्मिक प्रदर्शन है या सिर्फ एक कला रूप इसे इलाहाबाद की रामलीलाओं के जरिये समझने की कोशिश की गई है।

रामलीला के मंचन में काफी विविधता पाई जाती है इसके अलावा इसकी ख़ास बात यह होती है कि यह जिस विशिष्ट लोक की प्रस्तुति होती है उसके बहुत सारे सांस्कृतिक तत्व की एक कलात्मक बुनावट इसमें मिलती है। निश्चित रूप से यह बुनावट (Structure) कसी हुई न होकर ढीली होती है जिसमें से समसामयिक यथार्थ और लोक जीवन के समूहिक अनुभव के धागे उसमें अपनी डिज़ाइन आरोपित करते हैं।